फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 83 मई 1995

इस अंक में

- ईस्ट इंडिया कॉटन मिल
- आपबीती : फोर्ड ट्रैक्टर वरकर की
- विद्यार्थियों की बातें
- ब्रॉन लेबोरेट्री
- याददाश्त में सामुहिक कदम

रमता जोगी ठहर गया

मैनेजमेंटों से ज्ञान अर्जित कर नारद मुनि ने सम्पूर्णता के अहसास के वास्ते मजदूरों से मिलने की ठानी। अप्रैल के आरम्भ में फरीदाबाद में तिलक - गाँधी - अम्बेडकर - जवाहर - सुभाष - पटेल - शास्त्री - इन्दिरा - संजय - राजीव - राहुल - चौधरी - ख्वाजा - भाटिया नगर - कालोनी - बस्ती - सराय में मजदूरों से मिलने के लिये नारद जी जब चलने लगे थे तब हमने उन्हें गर्मियों में धूल-धूँये-बदबू की बहुतायत तथा पानी की कमी को ध्यान में रख श्री आरामचन्द्र की आराधना को क्षण भर भी नहीं भूलने का अनुरोध किया था। खण्डुआ-साफा-पग्गड़-टोप न सही, टोपी-साफी-अंगोछा से सिर ढँक कर रखने की हमने मुनिश्री से मिन्नत-सी की थी क्योंकि गर्मी-सर्दी में सिर खुला रखने के नये रिवाज की तरह दूर से ही घुटा सिर नजर आये यह नारद जी ने अपना पहचान-पत्र/आइडेन्टिटी कार्ड बना रखा है और हमें डर था कि शहर में हैजा-दस्त-पेचिश होने पर यूँ भी किसी की खैर नहीं होती, यह रमता जोगी तो परेशानी - शर्म से समाधी ही ले लेगा। नाटकों में नारद मुनि का रोल करने वालों द्वारा मुन्डे सिर का भ्रम पैदा करने के लिये बालों के ऊपर स्पेशल कट, नारद कट टोपी पहनने का हवाला दे कर हमने उनसे वही सिर पर डालने की विनती की पर मुनिश्री ने हमारी एक न सुनी और वीणा के तारों पर ऊँगली फेरते नारायण . . . नारायण कहते मजदूर लाइब्रेरी से चल दिये। आधी अप्रैल तक गर्मी का प्रकोप नद्दारद देख कर हमने इसे नारद जी पर प्रकृति की कृपा माना और फिर हम रुटीन कामों में उलझ गये।

29 अप्रैल की बात है। भरी दुपहरी में कमला सिनटैक्स का एक मजदूर सुपर अलॉय कास्ट - फरीदाबाद टूल्स के चोट खाये एक वरकर के साथ मजदूर लाइब्रेरी आया। डाई कास्टिंग मशीन ने फिर एक मजदूर का हाथ कुचल दिया था। फरवरी में लगी चोट अप्रैल में जा कर ठीक हुई और तब ई एस आई की मैडिकल फिटनेस ले कर फैक्ट्री पहुँचे वरकर को सुपर अलॉय कास्ट मैनेजमेंट ने ड्यूटी पर तो ले लिया था पर फिर नौकरी से इस्तीफे के लिये जोर डाला। मजदूर ने रिजाइन करने से इनकार कर दिया तो सुपर मैनेजमेंट ने उसका गेट बन्द कर दिया। क्या किया जाये के बारे में कमला सिनटैक्स और सुपर ग्रुप के उस मजदूर से हमारी बातचीत खत्म ही हुई थी कि बम्बई के एक मित्र को ले कर दिल्ली से एक दोस्त पहुँची। दो सवारी के चक्कर में बाटा चौक की हाँ कह कर बाटा मोड़ उतार गई बस ने दोस्तों को गर्मी के थपेड़े बढा दिये थे। प्यास से व्याकुल और दो पैसे कमा रहे दोस्तों ने पानी की जगह ठन्डा पीने-पिलाने पर जोर दिया। ढाबे से हम लौटे तो जे वी इलेक्ट्रोनिक्स के एक सस्पैन्ड वरकर को लिमिटेड बनाम प्रायवेट लिमिटेड की मैनेजमेंट रचित भूल-भुलैया में उलझे पाया। झालानी टूल्स के एक साथी ने उसे मैनेजमेंट जाल काटने की सरल राह सुझा कर विदा किया और फिर नाइट शिफ्ट के मद्देनजर कम से कम एक झपकी लेने की कहता हुआ साइकिल उठा कर खुद भी चल दिया। टाइम कम है कह कर बम्बई से आये मित्र ने भी रिसर्च वरकर के नाते हुये अपने अनुभवों पर जज्बात भरा एक लेख हमें तत्काल सुनाना आरम्भ कर दिया। बातचीत में हम इतना खो गये कि हमें पता ही नहीं चला कि ढले दरवाजे को ठेल कर नारद जी ने कब मजदूर लाइब्रेरी में प्रवेश किया। यह तो मुनिश्री द्वारा दिल्ली से आई दोस्त को कहे "दूधो नहाओ, पूतो फलो" के आशीर्वादी वचन पर हम सब चौंक कर खड़े हुये। नारद जी के होठों पर पपड़ी - सूखे गले - कलान्त मुख को देख कर हमें दुख हुआ। आदरपूर्वक उन्हें कुर्सी पर बैठा कर हमने हैन्ड पम्प से ताजा पानी ला उन्हें हाथ-मुँह धोने और पानी पीने को कहा।

दो दरवाजे, शहतूत के पेड़, एस्बेस्टोज चद्दरों तले प्लाई की छत और पँखे की ओर निहार कर मुनिश्री के मुख से बरबस "जय श्री आराम !" निकला। थोड़ी देर चुपचाप बैठ कर नारद जी आराम से साँस लेते रहे और फिर बतियाने लगे। मजदूर बस्तियों के अपने अनुभवों में बम्बई से आये मित्र और दिल्ली से आई दोस्त की दिलचस्पी को देख नारद जी चहचहाने लगे :

अनजाने में " दूधो नहाओ, पूतो फलो" मुँह से फिर निकल जाने पर मैं सकपका गया था तथा मेरा गला और सूख गया था। तुम लोगों की तीखी - तीव्र प्रतिक्रिया नहीं होने पर मुझे आश्चर्य हुआ और चैन भी मिला। इन 25-26 दिन में कई बार मेरे मुँह से आदतन निकले इन शब्दों पर मिले जवाबों ने हर बार मेरी जुबान बन्द कर दी और सोचने को मजबूर किया। मुजेसर में पानी के लिये सड़क जाम किये लोगों की भीड़ में औरतों की बड़ी संख्या देख कर मेरे मुख से आशीष के यह शब्द निकलते ही किसी ने कहा, "मुये की अकल तो देखो। पीने को पानी मिलता नहीं और दूध से नहाने की बात कर रहा है !" और भीड़ के तमतमाये चेहरे हँसी से खिल उठे थे। और "पूतो फलो" पर कहीं तो एक को ही पालने में दिन में तारे दीखने की टीस थी तो कहीं बेटा-बेटा के पुरुषप्रधानी खयाल पर करारी चोट मिली। विकास - तरक्की की मैनेजमेंटों की बातें मुझे कुछ अटपटी लगने लगी। अरे बेगार करने वाले भी दस-बारह को पाल लेते थे, यहाँ तो एक-दो में ही जान निकले जा रही है !

बच्चों के प्रति बढ़ती विश्वव्यापी अरूचि से नारद जी काफी कूपित थे। और इससे भी ज्यादा कुढे थे वे बड़े-बूढों की दयनीय स्थिति से। फरीदाबाद आने से पहले नारद जी टोकयो में थे। वृद्धों को समाज पर बोझ करार देती जापान में रेडियो-टी वी-पत्र-पत्रिकाओं की रिपोर्टों और बूढों पर खर्च में कटौती के तरीके सुझाते विद्वतापूर्ण लेखों से नारद जी का सिर चकरा गया था। इसे पश्चिमी, अमरीकी विकृति कहते और प्राचीन जापानी सभ्यता-संस्कृति में लौटने की वकालत करते छुट-पुट स्वरों ने नारद मुनि को राहत दी थी। लेकिन यहाँ, संसार के आध्यात्मिक स्रोत में मुनिश्री ने मजदूर बस्तियों में ऐसा कुछ देखा कि इस पहलू पर उनका मस्तिष्क प्रश्नों का भण्डार बन गया है :

यहाँ मैंने बड़ी तादाद में मजदूरों को सिंगल देखा है। 50 परसैन्ट से ज्यादा वरकर अधिकतर समय अकेले, एकल जीवन व्यतीत करते हैं। पुरूष ही नहीं, महिला वरकरों का भी यही हाल है। 60-70 साल पहले जब मैं आया था तब पहाड़ से पुरुष मैदान में काम करने आते थे ताकि शादी के लिये जरूरी पैसे कमा सकें। इधर तो फरीदाबाद में ही ऐसी मलयाली-मद्रासी, पंजाबी, लोकल लड़कियों की तादाद हजारों में है जो शादी कर सकें इसके लिये नौकरी कर रही हैं। और शादी के बाद नौकरी छोड़ना तो दूर की बात, पूरब के देहात से शादी के बाद फरीदाबाद आ कर अपने पतियों के साथ रहती महिलाओं के लिये भी यहाँ नौकरी करना दिन-ब-दिन जरूरी बनता जा रहा है। अकेले यहाँ फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूरों के माता-पिता, पत्नी-बच्चे पुश्तैनी घरों में खेती-दस्तकारी-पशुपालन करते हैं और वे खर्च कम करने के लिये यहाँ अपने ही जैसे चार-पाँच के संग आठ बाई आठ में रहते हैं। जिस पुरुष मजदूर की पत्नी व बच्चे उसके साथ यहाँ रहते हैं और मजदूरी नहीं करते उसका तो झुग्गी में भी गुजारा बहुत मुश्किल होता जा रहा है। आज माँ-बाप को साथ रखना मजदूरों के लिये असम्भव-सा हो गया है, भाई-बहन के बच्चों को पढाना-लिखाना तो किसी दूसरी दुनियाँ की बात लगती है। निचुड़ चुके मजदूरों की बड़ी तादाद वापस देहात में धकेल दी जाती है। पुश्तैनी ठिकानों पर मौत का इन्तजार करते बड़े-बूढे कभी बहु को तो कभी बेटे को शाप देते हैं। और जो पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं उनकी तो वैसे ही रेल बनी रहती है, किसी को चाय-पानी पर बुलाने के लिये भी दस बार सोचना पड़ता है।

(बाकी पेज दो पर)

रमता जोगी. . . (पेज एक का शेष)

इस प्रकार काफी कुछ कह कर नारद जी ने प्रश्न रखा : दस–बारह की जगह एक-दो बच्चे, बड़े-बूढे कूड़ेदान में, गम या खुशी के मौकों पर भी रस्म निभाने तक के लिये टाइम निकालने में दिक्कतें – आखिर यह सब क्या है?

सवाल उठा कर रमता जोगी चुप हो गया तो दिल्ली से आई दोस्त ने उनसे उत्तर में मदद के लिये सुझाव माँगे। नारद जी ने 110 साल पहले, विक्रमी सम्वत् 1942 में पृथ्वी लोक की अपनी यात्रा की बातें बताई :

मैं उथल-पुथल का बहुत शौकीन हूँ। और फिर, देवलोक में पृथ्वी पर तब हो रही घटनाओं पर चिन्ता व्याप्त थी। देवी-देवताओं को डर था कि आकाशवाणी की समाचार वाचिका की गोलमोल बातें भी कहीं रेडियो पर दास-दासियों के कानों में न पड़ जायें। इसलिये देवराज इन्द्र का अपने मनमाफिक आदेश पा मैं गरुड़ को टा - टा कर झूमता हुआ अमरीका में उतरा। जगह-जगह क्या बहसें हो रही थी ! वाह ! मेरा मन बल्लियों उछलने लगा था और कान तृप्त हो गये थे। शिकागो में गोली-फाँसी ने मजदूरों को भयभीत करने की जगह दुनियाँ-भर में वरकरों को विचारोत्तेजक वाचालता दी थी। क्या जज्बा था 8 घन्टे के वर्किंग डे के लिये ! मुझे देवताओं की चिन्ता जायज लगी। दास-दासियों को पृथ्वी लोक में मजदूरों के 8 घन्टे के कार्यदिवस के लिये उमड़ते आन्दोलन की भनक ही काफी थी देवलोक में बगावत के लिये ! इन्द्र दूरदर्शी हैं !! और बच्चो, लोग कहते हैं कि मैं चुगलखोर हूँ पर हकीकत यह है कि मेरे पेट में बात पचती नहीं हैं। तुम्हीं बताओ, मैनेजमेंटों की, खुफिया विभागों की तालों-तिजोरियों-तहखानों और सिले होठों में बन्द मनहूसियत डँके की चोट उजागर हो तो कितना मजा आये ! शिव का तीसरा नेत्र भी तब मजदूरों को कन्ट्रोल करने में फेल हो जाये!! सुनो, यह जो खुलेपन-पारदर्शिता-ट्रान्सपैरेन्सी की फिलासफी आजकल बघारी जा रही है यह मन पर नियन्त्रण के लिये है ताकि आँखों के सामने की हकीकत दिखाई ही न दे। ऊँहूँ ! मैं भी बहक कर कहाँ फिलासफी - विलासफी में पहुँच गया। माफ करना। अच्छा, सुनो।

दरअसल दस्तकारी को प्रतिस्थापित - रीप्लेस करता फैक्ट्री प्रोडक्शन मेहनतकश लोगों को अधिकाधिक मशीनों के पुर्जों में बदल रहा था। मशीनों के माफिक इन्सान ढालना गति पकड़ रहा था। इस वजह से कुछ लोग तो बेगार की जलालत तक को मजदूरी-प्रथा से बेहतर मानते आये हैं। खैर। गैस की रौशनी का स्थान लेती बिजली की लाइटिंग मशीनों को उजाला प्रदान करने और मनुष्यों में उल्लुओं का रात को जागने का पुट मिलाने की ओर अग्रसर थी। रात को सोने की मानव प्रकृति को ठेंगा दिखाया जा रहा था। उसी दौरान चाबुक-कोड़ों के जरिये 18–18, 20–20 घन्टे काम लेने के तरीकों को मजदूरों के सामुहिक विरोध अधिकाधिक नाकारा बना 12–13 की राह 10 घन्टे की ओर लाये थे। ऐसे में खुले दमन की जगह भूख एक प्रमुख औजार बनी थी, बनी है, मशीनों के माफिक मनुष्यों को ढालने के लिये। वेतन कम करने के लिये पीस रेट आदि क्या-क्या हथकन्डे नहीं अपनाये गये कि लोग ज्यादा से ज्यादा समय काम करें ! 8 घन्टे के वर्किंग डे के लिये मजदूरों का सामुहिक विरोध इसी की प्रतिक्रिया था। वरकर डिमान्ड कर रहे थे कि एक आदमी को एक दिन में 8 घन्टे काम करने के लिये इतना वेतन मिले कि उसके परिवार का गुजारा हो सके। और जानते हो, तब परिवार का मतलब बूढे माँ-बाप और बीबी के साथ 8–10 बच्चे था ! मजदूरों में क्या उत्तेजना थी !! पर आह, मशीन की साइज बढती गई और मनुष्य-रूपी उसके पुर्जे की साइज छोटी होती गई। आदमी और औरत के भेद मिटने लगे, बढती संख्या में महिलायें मजदूर बनने लगी।

पूरा ध्यान लगा कर नारद जी की बातें सुन रही दिल्ली से आई दोस्त इस पर भड़क गई। "आप क्या चाहते हैं कि औरत आदमी के पैर की जूती रहे ! घर की चारदीवारी में कैद रह कर चूल्हे की चाकरी ही स्त्री का कार्य रहे !!"

सोते में झकझोरे जाने की तरह नारद जी चौंके : नहीं बेटी नहीं ! मैं तो रमता जोगी हूँ। मेरी याददाश्त में देवताओं की याद बसी है और जहाँ तक मुझे याद है, मैं मनुष्यों के बीच रमता रहा हूँ। मैंने स्त्री के प्रथम स्थान वाली मानव की सामाजिक रचनायें देखी हैं। समता के दौरों में महकती-फलती-फूलती नारियों से मैंने आनन्ददायक वार्तायें की हैं। छुट-पुट स्त्री-सत्ता के क्षेत्र - दौर भी देखे हैं। और तुम्हारी ही तरह पुरुष-सत्ता को भी बखूबी देखा है, उसकी घुटन को भुगता है। पर मैं रमता जोगी हूँ और जानता हूँ कि यह भी चिरस्थाई नहीं है। नहीं बेटी नहीं, मेरे कहने का मतलब था कि आठ घन्टे के वर्किंग डे का आन्दोलन फेल हो गया और पुरुष के संग-संग स्त्री का मजदूर बनना जरूरी हो गया। जोइन्ट स्टॉक - लिमिटेड कम्पनियों ने इसमें महत्ती भूमिका अदा की। और, मजदूरी करने की मजबूरी न तो आदमी की मुक्ति है और न ही इसका नारी की मुक्ति से कुछ लेना-देना है। दिल्ली में तुमने बड़ी तादाद में महिलाओं के दफ्तरी काम की भागमभाग में चिन्ता - तनावग्रस्त चेहरे देखे ही होंगे। कोई शंकायें बाकी हैं तो यहाँ फैक्ट्रियों में काम करती महिला मजदूरों से बात करो।

तब तक चुप्पी लगाये बैठा बम्बई से आया मित्र इस पर बोलने लगा, "महाराज, आप कहते हैं कि 8 घन्टे कार्यदिवस का आन्दोलन फेल हो गया जबकि आज दुनियाँ-भर में 8 घन्टे का वर्किंग डे है। इन 100 साल में बहुत-कुछ हुआ है और अब तो 35 घन्टे के सप्ताह, बल्कि 6 ही नहीं 4 घन्टे के वर्किंग डे के लिये आवाजें उठ रही हैं...

बम्बई से आये मित्र ने धाराप्रवाह बोलना शुरु किया ही था कि नारद जी ने उसे शान्त होने को कहा। मित्र कुछ उखड़ा पर फिर मुनिश्री के गम्भीर मुख को देख कर चुप हो गया। और नारद जी बोले :

बेटा तुम बहुत भोलें हो। बहुत पढ़े-लिखे हो पर कुरेदने, चबाने की बजाय जो कुछ तुम्हें परोसा जाता है उसे निगल लेते हो। 8 घन्टे की शिफ्ट को तुम 8 घन्टे का वर्किंग डे मान बैठे हो ! सौ साल पूर्व दस-पन्द्रह के एक साथ रहने की जगह अब तीन-चार के एक साथ रहने को समझदारी माना जाता है। और उस समय जहाँ 10–15 के गुजारे के लिये एक का मजदूरी करना न्यायसंगत था वहाँ आज तीन-चार के गुजारे के लिये पुरुष, स्त्री और बच्चों का मजदूरी करना – आठ घन्टों की शिफ्ट के बाद ओवरटाइम/पार्टटाइम काम भी करना आवश्यकता है। संख्या घट गई है और काम के घन्टे बढ़ गये हैं। तीन-चार के गुजारे के लिये वर्किंग डे अब 30 घन्टों का हो गया है। हाँ बच्चों, दिन अब भी 24 घन्टों का ही है पर वर्किंग डे 30 घन्टों का !

हम सब के चेहरों पर प्रश्नवाचक भाव देख कर नारद जी ने गिनाना शुरु किया :

आदमी की 8 घन्टों की ड्यूटी + औरत की 8 घन्टों की ड्यूटी + शिफ्ट के बाद आदमी का 8 घन्टे ओवरटाइम/पार्टटाइम काम + औरत का शिफ्ट के बाद ओवरटाइम काम + बच्चों का ध्याड़ी पर काम ... हिसाब लगा लो, 30 से ज्यादा ही घन्टों का कार्यदिवस है आज। और काम की तीव्रता ! ब्रह्मा के इस पुत्र का सिर तो चकराने लगता है।

नारद जी की बातें सुन कर हम सब के विचार - खयाल अस्थिर हो गये थे। टूटती जड़ता ने हमें असहज भी कर दिया था। ऐसे में बम्बई से आये मित्र को पहाड़ जा कर तरोताजा होने की अपनी योजना बरबस याद आ गई। तीन साल लगातार 11 घन्टों की शिफ्ट, बल्कि रिसर्च वरकर के नाते चौबिसों घन्टे मस्तिष्क पर सवारी करते रिसर्च पेपरों - सवालों के ढेर ने उन्हें इतना तोड़ दिया था कि मन-मस्तिष्क-शरीर की जकड़ को खोलने के लिये पहाड़ पर ट्रैकिंग का प्रस्ताव ले कर हमारे पास आये थे। नारद जी को यह सब बताया और साथ चलने को कहा तो मुनिश्री बोले :

बेटा, रिसर्च वरकर के नाते तरोताजा होने के वास्ते पहाड़ जा रहे हो तो मत जाओ। फिर निचोड़े जाने के लिये प्रकृति से रस ग्रहण करना अपनी गुलामी को दीर्घ करना है। यहाँ हुई बातों पर प्रकृति की सुन्दर गोद में विचार करोगे तो मजदूरी-प्रथा से लोहा लेने की शक्ति ग्रहण करके आओगे। रफ्तार, कार्य की तीव्रता के बारे में तुमसे खासकरके बात करनी है। तरोताजा हो आओ तब वह चर्चा करेंगे। इस बीच यह रमता जोगी तो यहाँ फरीदाबाद में ही ठहरा-रुका-रमा रहेगा और फैक्ट्री मजदूरों से नवजीवन प्राप्त करेगा।■

इस अखबार के काम में हाथ बँटाने के लिये,
अखबार के विस्तार के लिये आप :

- **अखबार में छपी सामग्री पर राय दें।**
- **अखबार में छपने के लिये सामग्री जुटायें।**
- **अखबार बाँटने में हिस्सा लें।**
- **अखबार पर खर्च के लिये रुपये-पैसे दें।**

फैक्ट्रियों में तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना हमारे लिये खुशी का काम है। अगर आपके पास ऐसी जानकारी है तो वह हमें दें।

बखान : आप-बीती का, बातचीत में (5)

फोर्ड ट्रैक्टर के बगल में 15 सैक्टर है पर वहाँ फोर्ड का कोई मजदूर एक कमरे - किचन में रहने की कोशिश करेगा तो उसे सूखी रोटी भी नसीब नहीं होंगी। इस बार हमने जिस फोर्ड मजदूर से बात की उसे फैक्ट्री में काम करते बीस साल से ऊपर हो गये हैं। इधर-उधर किरायेदार की दिक्कतें झेल कर उसने फैक्ट्री से आठ - नो किलोमीटर दूर बिना सीवर लाइन की एक कालोनी में दो कमरे डाले हैं। ड्यूटी जाते वक्त भीड़भाड़ व भागमभाग में सदा-से बन्द दिल्ली-बम्बई-मद्रास रूट पर रेल फाटक और राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर दो को जल्दी से जल्दी पार कर टाइम पर फैक्ट्री पहुँचने के चक्कर में हर रोज जान को खतरा रहता है। शिफ्ट खत्म होने पर घर जाते समय थकान से चिड़चिड़ी भीड़ में झगड़े की आशंका हर पल रहती है। अपनी व पत्नी की खराब तबीयत, मानसिक तनाव और कभी टाइम न होने से पीड़ित फोर्ड मजदूर ने अपनी बातें कहने में बहुत रूचि ली। बातचीत के लिये समय निकालने के वास्ते फोर्ड वरकर ने दो दिन ओवरटाइम उर्फ ओवरस्टे छोड़ी।

काफी लड़-झगड़ कर हम मैनेजमेंट को किसी डिमान्ड को मानने को मजबूर करते हैं। पर कुछ समय बाद मैनेजमेंट उसे भी देने में टालमटोल करती है। मैनेजमेंट का हमें टाइम पर चीजें नहीं देना मुझे बहुत अखरता है। बात यहाँ तक गई है कि मैनेजमेंट ने कई चीजें बन्द ही कर दी हैं। हर साल हमारा टूर जाता था वह मैनेजमेंट ने खत्म कर दिया है। वर्ष में एक बार आस-पास की जगहों पर घूमने जाने का हमारे बच्चों का कार्यक्रम भी फोर्ड मैनेजमेंट ने खत्म कर दिया है।

मैनेजमेंट ने हमारे ओवरटाइम को ओवरस्टे कहना शुरु करके हमें भारी आर्थिक नुकसान पहुँचाया है। आजकल लगातार ओवरस्टे लग रहा है और इस ओवरटाइम को ओवरस्टे कहने से हर वरकर को महीने में एक हजार रुपये तक का नुकसान हो रहा है।

फोर्ड मैनेजमेंट लगातार वर्क लोड बढा रही है। 1990 में हम एक दिन में 50 ट्रैक्टर बनाते थे जबकि अब रोज 73 ट्रैक्टर बनाते हैं। ऊपर से मैनेजमेंट और लीडर कहते हैं कि हम काम नहीं करते। प्रोडक्शन बढाने के लिये मैनेजमेंट लगातार टाइम स्टडी करवाती रहती है। और डेजिगनेशन देने में मैनेजमेंट की नानी मरती है। लीडरों व उनके गुर्गों और अपने चमचों का ही मैनेजमेंट ग्रेड बढाती है और डेजिगनेशन बदलती है।

आप लीडरों से इतने नाराज क्यों हैं?

हममें से ही लीडर बनते हैं और फिर काम नहीं करते। लीडरों और उनके गुर्गों का काम भी हमें और कैजुअलों को करना पड़ता है। हम जब मैनेजमेंट से कोई डिमान्ड करते हैं तो लीडर उसमें अड़ँगे डालते हैं और मैनेजमेंट की पैरवी करते हैं। वैलफेयर और ट्रस्ट से पैसे लीडर, उनके गुर्गे तथा चमचे लेते रहते हैं और जरूरतमन्द आम मजदूरों को इनमें से पैसे नहीं दिये जाते।

मुझे लीडरों का कैजुअल वरकरों के प्रति व्यवहार बहुत अखरता है। जब भी लीडरों की मैनेजमेंट से कोई खींचातान होती है यह लोग कैजुअल वरकरों को बलि के बकरों की तरह इस्तेमाल करते हैं।

क्या तबियत खराब है? बहुत परेशान दीख रहे हैं।

हाँ, पेट में तकलीफ रहती है। शिफ्टों में ड्यूटी ने खान-पान का कोई समय - नियम नहीं रहने दिया है। लगातार ओवरस्टे, वीकली रैस्ट के दिन भी ओवरस्टे ने आराम की गुँजाइश ही नहीं छोड़ी है। और फिर फैक्ट्री का दूषित वातावरण ! इन सब ने सेहत को बहुत खराब कर दिया है। फोर्ड मैनेजमेंट हर साल रक्त-दान शिविर लगाती है पर इन बीस बरसों में एक बार भी हमारे स्वास्थ्य की जाँच के लिये मेडिकल शिविर नहीं लगाया है।

कौनसी घटना का आप पर गहरा असर पड़ा है?

1979 में यहाँ मजदूरों पर पुलिस फायरिंग मुझे अब भी हूबहू याद है। कई अन्य मजदूरों की तरह मैं भी साइकिल वहीं छोड़ पुल से कूद कर भागा था। पुलिस की गोलियों से मैं बाल-बाल बचा था।

(नारद जी खतों वाला पेज खा गये। पत्रों को कुछ जगह फोर्ड वरकर से हुई बातचीत के कुछ हिस्से छोड़ कर दी है। फोर्ड में मजदूरों के सामुहिक कदमों की जो उन्होंने चर्चा कीं वह पेज 4 पर अलग से हमने दी है।)■

विद्यार्थियों की बातें

(एक अध्यापक की जुबानी)

पहली मार्च से 31 मार्च तक जमा दो, मैट्रिक व मिडल स्तर की परीक्षायें निर्धारित की गई हैं। हरियाणा राज्य शिक्षा बोर्ड ने हर बीमारी की जड़ नकल घोषित कर नकल रोकने के लिये युद्धस्तर पर पुलिस व प्रशासन का इन्तजाम किया।

चाहे स्कूलों में स्टाफ पूरा न हो, शिक्षण के उपयुक्त इमारतें चाहे न हों, पाठ्यक्रम पेचिदगियों से भरा - अनुपयोगी - अव्यवहारिक - बोरिंग क्यों न हो, बस मूल बुराई नकल को जड़ से उखाड़ फेंकना है।

वास्तव में राज्य शिक्षा बोर्ड लूट की एक दुकान है जो उभरती युवा पीढी को पूर्णतया आतँकित रखना चाहती है। इसकी वार्षिक कमाई सतरह करोड़ रुपये से अधिक हो चुकी है और इस बात पर बोर्ड को गर्व है।

आतँक का साम्राज्य तभी शुरु हो जाता है जब परीक्षार्थी छात्र व छात्रायें परीक्षा केन्द्र में प्रवेश करते हैं। अनुभव की बात है कि बिना वजह बच्चों को ड्यूटी स्टाफ द्वारा डाँटा-फटकारा जाता है। ऊपर से उड़न दस्ते पर उड़न दस्ते आते हैं। बार-बार छात्र-छात्राओं को खड़ा करते हैं और तलाशी के नाम पर बेइज्जत करते हैं। कभी स्टैम्प लगाई जाती है, कभी हस्ताक्षर करवाये जाते हैं, कभी फोटो मिलाये जाते हैं। कागज की अतिरिक्त शीट माँगने पर भी पाँच-सात मिनट का समय बरबाद कर दिया जाता है। कुल मिला कर आधा समय गड़बड़ घोटाले व पूरा समय डाँट-फटकार खाने में चला जाता है।

आम धारणा है कि अध्यापक पढाते नहीं हैं। अध्यापक कहते हैं कि विद्यार्थी पढ़ते नहीं हैं। क्यों नहीं पढ़ाया जाता? क्यों नहीं पढा जाता? और यदि कोई पढ़-लिख कर बड़ा आदमी बन भी जाता है तो मानव जाति व समाज के लिये उपयोगी न रह कर हृदय-विहीन बन इसी व्यवस्था का एक पुर्जा बन जाता है।

20.3.95 को झोझूकलाँ परीक्षा केन्द्र के सभी छात्रों ने पुस्तिकाओं की सामुहिक होली जला दी और आतँकवादी व्यवस्था पत्थर की मूर्ति बनी तमाशा-सा देखती रही। सेनापति की पिटाई व अपमान पर उड़न दस्ता दुम दबा कर भागा। निकट के परीक्षा केन्द्र की छात्राओं ने इसी घटना को दोहराया। इसका बदला बोर्ड ने मिडल के अल्पायु बच्चों से लिया। अपने आतँक का सिक्का जमाये रखने के लिये शिक्षा बोर्ड ने सभी केन्द्र अधीक्षकों को बदल दिया और गाँवों के अनेक परीक्षा केन्द्रों को दूर-दराज शहरों में पटक दिया। परीक्षार्थियों को इन परिवर्तनों की सूचना तक हरियाणा राज्य शिक्षा बोर्ड ने नहीं दी।

(पत्र हमने कुछ छोटा कर दिया है।)

22.3.95 — एक अध्यापक

★ हरियाणा सरकार के आदेश अनुसार दिनाँक 31.3.93 तक सर्विस के 5 वर्ष पूरे करने वाले कर्मचारियों को पक्का करने, उक्त आदेश लागू करने की बजाय आठ-आठ दस-दस साल से काम कर रहे जिन वरकरों को निकाल दिया है उन्हें वापस ड्यूटी पर लेने और 1.10.94 से अब तक के बकाया वेतन के लिये **वन विभाग के स्त्री व पुरुष वरकरों** को 24.4.95 को फरीदाबाद में डी सी आफिस के गेट पर धरने पर बैठे 63 दिन हो गये थे और इन मजदूरों की क्रमिक भूख हड़ताल का वह 43 वाँ दिन था।

★ राजस्थान सरकार की पैसे बढाने के मामले में धोखाधड़ी और छँटनी की साजिश के खिलाफ **साथिन महिला वरकरों** ने 17 अप्रैल को जयपुर में विधान सभा के बाहर धरना दिया।

★ मार्च माह का वेतन 2 मई तक भी मैनेजमेंट ने नहीं दिया तब **झालानी टूल्स फस्ट प्लान्ट मशीन शॉप** के वरकरों ने जनरल मैनेजर परसनल को घेर लिया।

19 मई को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 मई को रात 8 बजे इस अखबार के मई अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

अखबार बाँटने में मदद चाहिये। जो इस काम में हाथ बँटाना चाहते हैं वे मजदूर लाइब्रेरी में सम्पर्क करें।

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे दो हजार मजदूर अगर हर महीने दो-दो रुपये दें तो इस अंक की तरह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

ब्रॉन लेबोरेट्री

इस कम्पनी में परमानेन्ट वरकर 54 हैं और ठिकेदारी बन्दा 100 हैं। लड़कियों की संख्या 85 है।

इस कम्पनी में जब काम रहता है तो 100 बन्दा को बहाली कर लेता है और जब काम नहीं रहता है तो वरकरों का हिसाब कर देता है। यदि काम रहता है तो भी टाइमकीपर हरिशंकर और परसनल मैनेजर हँस दस-पन्द्रह बन्दों का प्रत्येक दिन ब्रेक करता है। जब वरकर बोलता है तो टाइमकीपर और परसनल मैनेजर घूस की बात करने लगते हैं।

यहाँ तक ही नहीं, परसनल मैनेजर लड़कियों के साथ छेड़खानी भी करता है। ज्यादातर ये ऐसी लड़कियों को निकालता है। अगर परसेन्टेज निकाला जाये तो अधिक संख्या में लड़कियाँ ही पाई जायेंगी।

यदि कोई ठिकेदारी बन्दा शनिवार या सोमवार को ड्यूटी नहीं आता है तो सन्डे का पैसा काट लेता है। और वह पैसा टाइमकीपर और परसनल मैनेजर के पेट में जाता है।

इतना ही नहीं, मौका मिलने पर परमानेन्ट वरकर को ठिकेदारी में दे देता है।

यहाँ तक ही नहीं, हरिशंकर बाहर से मजदूर ला कर काम कराता है। काम खत्म हो जाने पर मजदूर रुपया माँगता है तो 50 की जगह 25 रुपया देता है। मजदूर से बात करता है चलो 50 रुपया देंगे और काम एकदम हल्का है। काम हो जाने पर मजदूर को बोलता है कि 15 रुपया ले लो।

28.4.95 — एक मजदूर

ईस्ट इंडिया कॉटन

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल के परसनल डिपार्टमेंट में बहुत धाँधलेबाजी हो रही है। जब वरकर एडवाँस लेते हैं तो परसनल आफिस के जो एडवाँस देने वाले हैं वो वरकरों से पैसे लेते हैं या फिर दारू पिलाने की माँग रखते हैं। ऐसी ही एक बात अभी दो-चार दिन पहले की है। एक वरकर ने एडवाँस लिया तो परसनल आफिस के मिस्टर अनिल कुमार और शिवाजी मिश्रा ने उससे दारू पिलाने को कहा और वरकर ने हाँ भर ली। उसी शाम वे उसके घर पर पीने गये तो पहले खूब पी और बाद में उस वरकर को सिगरेट लेने भेज दिया और पीछे से उसकी घरवाली के साथ छेड़छाड़ करनी शुरु कर दी। वरकर की घरवाली ने शोर मचाया तो पड़ोस के कुछ आदमियों ने उनको पहले खूब पीटा तथा बाद में ईस्ट इंडिया के गेट पर छोड़ गये। वह वरकर मुजेसर का रहने वाला था। ये हैं आजकल के दरिन्दों के कारनामे जो ईस्ट इंडिया में अभी भी कार्यरत हैं।

27.4.95 — ईस्ट इंडिया के कुछ मजदूर

हिन्दुस्तान सिरिंज

हिन्दुस्तान सिरिंज एन्ड मेडिकल डिवाइसेज प्लान्ट - I, 44 इन्डस्ट्रीयल एरिया में 85 परमानेन्ट और 150 कैजुअल वरकर हैं जिनमें 65 लड़कियाँ हैं।

इस कम्पनी में वरकरों से बहुत काम लिया जाता है। परमानेन्ट वरकर भी कैजुअलों को परेशान करते हैं। अगर किसी वरकर की बीमार हो जाती है तो भी मैनेजमेंट छुट्टी नहीं देती और रिजाइन लिखवा लेती है।

प्रोडक्शन मैनेजर बाबू लाल शर्मा लड़कियों के साथ मजाक में गाल पर हाथ रख कर शरारत करता है। इस कम्पनी का वातावरण इतना गन्दा है कि बहुत लड़कियाँ रिजाइन दे कर निकल जाती हैं। कम्पनी में पेमेन्ट सही नहीं दी जाती। पेमेन्ट वरकर की बनती है 1100 रुपये उसमें से 50 रुपया काट लिया जाता है और वह पैसा टाइमकीपर के पेट में जाता है।

28.4.95 — एक मजदूर

सतह के तले छिपी इबारत

याददाश्त में सामुहिक कदम (1)

फोर्ड ट्रैक्टर फैक्ट्री में 20 साल से काम कर रहे वरकर से बातचीत में मजदूरों के सामुहिक कदमों की चर्चा शुरु हुई तो फोर्ड मजदूर ने याददाश्त से तत्काल ढेरों ऐसे कदमों के बारे में बताया। फोर्ड वरकर की बातों से लगता है कि एस्कोर्ट्स में मजदूरों को छोटी से छोटी डिमान्ड हासिल करने के लिये खुद कदम उठाने पड़े हैं, उन्होंने सामुहिक कदम उठाये हैं। विषय के महत्व को देखते हुये हम उन्हें अलग से दे रहे हैं और इसके साथ ही एक सीरीज की शुरुआत कर रहे हैं जिसमें मजदूरों की याददाश्त में बसे सामुहिक कदमों को दिया करेंगे ताकि यादें धुँधली पड़ने - मिटने की बजाय हरी-भरी रहें और सतत वर्तमान में मजदूरों के सामुहिक कदमों को खाद-पानी दें। फोर्ड ट्रैक्टर वरकर की 20 साल की याददाश्त में बसे कुछ सामुहिक कदमों की जानकारी संक्षेप में प्रस्तुत है :

★ असेम्बली, शेड्युलिंग प्रोग्रेस, असेम्बली प्रोग्रेस, पी पी सी, आटो सैक्शन डिपार्टमेंटों के वरकरों को ट्रैक्टर टैस्टिंग, टायर ईश्यु, रिम ईश्यु इत्यादि कामों को खुले मैदान में करना पड़ता है। खुले में काम करते समय इन मजदूरों को सर्दी-गर्मी-बरसात की परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं। ट्रैक्टर टैस्टिंग जैसे कामों में ढाई-तीन घन्टे लग जाते हैं। बारिश में भीगने से बचने के लिये यह वरकर बहुत समय से लीडरों और मैनेजमेंट से रेनकोट माँग रहे थे। कोई सुनवाई नहीं होने पर 1990 में मजदूरों ने खुद कदम उठाने का फैसला किया। बिना किसी बिचौलिये के प्रत्येक डिपार्टमेंट के वरकरों द्वारा 15-15, 20-20 के समूहों में मैनेजमेंट के पास जाना मजदूरों ने तय किया। बरसात के मौसम में समूहों में मैनेजमेंट के पास जाने का सिलसिला शुरु हुआ। 1990 के बाद 91 और फिर 92 भी निकल गये पर असेम्बली, शेड्युलिंग प्रोग्रेस, असेम्बली प्रोग्रेस, पी पी सी, आटो सैक्शन डिपार्टमेंटों के मजदूरों ने अपने सामुहिक कदम जारी रखे। 1993 में बरसात आरम्भ होने के साथ ही इन डिपार्टमेंटों के मजदूरों ने 15-15, 20-20 के समूहों में मैनेजमेंट के पास जाने का सिलसिला फिर आरम्भ किया ही था कि फोर्ड मैनेजमेंट ने वरकरों को रेनकोट दे दिये।

★ कास्टिंग, हीट ट्रीटमेन्ट, फेज थ्री, पेन्ट शॉप डिपार्टमेंटों के वरकरों को गैस, धूँये, धूल, बुरादा और कार्बन से फैले प्रदूषण में काम करना पड़ता है। इस वर्किंग कन्डीशन की वजह से इन मजदूरों को कई बीमारियाँ हो जाती हैं। पाँच-छह साल पहले कुछ राहत के लिये वरकरों ने फ्रूट जूस की माँग की थी। कई बार इकट्ठे हो कर मैनेजमेंट के पास गये तब जा कर फ्रूट जूस की डिमान्ड मानी गई। तकलीफें फिर भी बढती रही। पिछले साल फिर कुछ राहत के लिये टॉनिक की डिमान्ड मैनेजमेंट से की गई। कास्टिंग, हीट ट्रीटमेंट, फेज थ्री, पेन्ट शॉप के मजदूरों ने प्रत्येक डिपार्टमेंट से 15-20 के समूह में मैनेजमेंट के पास जाने का तय किया। मजदूरों के सामुहिक कदमों के इस सिलसिले को साल भर से ऊपर हो गया तब जा कर फोर्ड मैनेजमेंट ने मार्च 1995 में टॉनिक की डिमान्ड मानी।

★ मशीनों पर काम करते समय उछलती, चिप्स से आँख में चोट लगने का खतरा रहता है। ट्रैक्टर टैस्टिंग करते समय तो आँखों की रक्षा के लिये चश्मे और भी जरूरी हैं। और फिर कहीं कूड़े-कचरे तो कहीं बुरादे के आँखों में गिरने की समस्या पूरी फैक्ट्री में है। मजदूरों ने कई बार लीडरों और मैनेजमेंट से चश्मों की डिमान्ड की पर हर बार टाल दिये गये। 6-7 साल पहले फोर्ड मजदूरों ने खुद कदम उठाने का फैसला किया। बिना किसी बिचौलिये के पूरी फैक्ट्री में वरकरों ने डिपार्टमेंटवाइज कदम उठाये। समूहों में मजदूरों ने अपने-अपने डिपार्टमेंट हैड के पास जाना और चश्मे डिमान्ड करना शुरु किया। इन सामुहिक कदमों को चलते डेढ साल हो गया तब फोर्ड मैनेजमेंट ने सब मजदूरों को चश्मे दिये। मशीन शॉप वरकरों ने भद्दे चश्मों के खिलाफ आवाज उठाई और ढँग के चश्मे हासिल किये

★ सर्दी में खुले में काम करते पी पी सी डिपार्टमेंट के वरकरों द्वारा लम्बे समय से लीडरों व मैनेजमेंट से की जा रही जैकेट की माँग जब नहीं मानी गई तो इन मजदूरों ने स्वयं कदम उठाना तय किया। 1990 में पी पी सी वरकर इकट्ठे हो कर डिपार्टमेंट हैड से मिले। उस अफसर ने अपनी लाचारी जाहिर की। मजदूरों ने परसनल मैनेजर के पास समूहों में जाना तय किया। महीने में दो-तीन बार बारी-बारी से 8-10 के समूह में पी पी सी मजदूरों ने ड्यूटी टाइम में परसनल मैनेजर के पास जाना और जैकेट डिमान्ड करना शुरु किया। 1990 में सर्दियों में महीने में दस-बारह दिन पी पी सी मजदूरों ने परसनल मैनेजर के पास जा कर अपनी जैकेट की डिमान्ड दुहराई। 1991 की सर्दियों के आरम्भ के साथ वरकरों ने फिर इन सामुहिक कदमों के सिलसिले की रफ्तार बढाई। फोर्ड मैनेजमेंट ने 91 की सर्दियों में पी पी सी मजदूरों को जैकेट दे दी।

★ शेड्युलिंग प्रोग्रेस, पी पी सी और असेम्बली प्रोग्रेस डिपार्टमेंटों के मजदूर जब भी तौलियों की माँग करते, लीडर और मैनेजमेंट हँसी में उड़ा देते। इस पर दस-बारह साल पहले इन डिपार्टमेंटों के वरकरों ने इकट्ठे हो कर अपने-अपने डिपार्टमेंट हैड से तौलिये माँगना तय किया। उन साहबों द्वारा असमर्थता जाहिर करने के बाद इन डिपार्टमेंटों के मजदूर समूह में सेफ्टी मैनेजर के पास गये। सेफ्टी मैनेजर से सवाल-जवाब कई बार हुये। मजदूरों से घिरते ही मैनेजर हक्का-बक्का हो जाता। फोर्ड मैनेजमेंट ने तब शेड्युलिंग प्रोग्रेस, पी पी सी और असेम्बली प्रोग्रेस मजदूरों को तौलिये दिये।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।